
विवाह संरक्ष



विवाह - एक पवित्र संस्कार

हिन्दू-विवाह एक पवित्र धार्मिक संस्कार है। मनुष्य पशु की भाँति अमर्यादित स्वेच्छाचारी न हो जाये, उसकी इन्द्रिय-चरितार्थ करने की वासना संयमित हो, भोग-लालसा मर्यादित रहे, भाव में विशुद्धि बनी रहे, संतानोत्पादन के द्वारा वंश की रक्षा और पितृ-ऋण का शोध हो, भोग का तत्व जानकर संयम के द्वारा मनुष्य कमशः त्याग की ओर अग्रसर हो सके, प्रेम को केन्द्रीभूत कर के उसे पवित्र बनाने का बल प्राप्त हो, स्वार्थ का संकोच और परार्थ-त्याग की बुद्धि जाग्रत होकर वैसे ही परार्थ-त्यागमय जीवन का निर्माण हो और अन्त में मानव जीवन की सफलता रूप भगवत्प्राप्ति हो जाये - इन्हीं सब पवित्र उद्देश्यों को लेकर हिन्दू-विवाह का पावन विधान किया गया है। विवाह से विलास-वासना का सूत्रपात नहीं होता, अपितु संयम-नियमपूर्ण जीवन का प्रारम्भ होता है।

इस जगत् की रचना पुरुष और प्रकृति के संयोग से हुई हैं और जब तक जगत् रहेगा, इस प्रकृति-पुरुष का संयोग-सम्बन्ध भी बना रहेगा। पुरुष और प्रकृति-दोनों अनादि हैं। पुरुष के संसर्ग से प्रकृति ही समस्त प्राणि जगत् को, समस्त विकारों और अखिल गुणों को उत्पन्न करती है -

प्रकृति पुरुषं चैव विद्ययनादि उभावपि ।
विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसंभवान् ॥

(गीता 13/19)

प्रकृति शक्ति है, पुरुष शक्तिमान् है। शक्ति के बिना शक्तिमान् का अस्तित्व नहीं और शक्तिमान् के बिना शक्ति के लिये कोई स्थान नहीं। शक्ति-शक्तिमान् का अभिनव सम्बन्ध है। यही नारी और नर के सम्बन्ध का मूल तत्व है, नर पुरुष का और नारी प्रकृति का प्रतीक है। नारी का नाम ही प्रकृति है। एक के बिना दूसरा अपूर्ण है। दोनों के कर्तव्य तथा कर्मक्षेत्र पृथक्-पृथक् होने पर भी वे एक ही शरीर के दक्षिण और वाम, दो अङ्गों की भाँति एक ही शरीर के दो संयुक्त भाग हैं और इन दोनों के कार्य भी एक दूसरे के पूरक तथा एक ही शरीर की स्थिति, समृद्धि, सुव्यवस्थिति, पुष्टि और तृष्णि

के कारण हैं। एक के बिना दूसरे का काम नहीं चल सकता। अपने-अपने क्षेत्र में दोनों की ही प्रधानता और श्रेष्ठता है, पर दोनों की श्रेष्ठता एक ही परम श्रेष्ठ की पूर्ति में संलग्न है। दोनों मिलकर अपने-अपने पृथक् कर्तव्यों के पालन द्वारा परस्पर सुख प्रदान करते हुए जीवन के परम लक्ष्य-भगवान् को प्राप्त कर सकते हैं। नर भगवान् की प्राप्ति करता है- पतिव्रता नारी के दिव्य त्यागमय पवित्र आदर्श को सामने रखकर भगवान् की सहज ही प्राप्ति करती है - अपने अभिन्नस्वरूप स्वामी का सर्वाङ्गपूर्ण अनुगमन करके स्वामी को परमेश्वर मानकर, सहज ही भगवदाकार वृत्ति बनाकर। यह नर और नारीका स्वरूप, कर्तव्य और उनकी विवाह-साधना का परिणाम है। नारी पतिगतचित्ता तथा पतिगणप्राण होकर अपने क्षेत्र में ही अपने दृष्टिकोण से पति की सेवा करती है - भगवत्प्राप्ति के लिये और नर भी अपने क्षेत्र में रहकर अपने क्षेत्र तथा कार्य में भेद रहने पर भी दोनों का लक्ष्य एक ही है और दोनों के ही स्थान तथा कर्तव्य एक-दूसरे के लिये अत्यन्त प्रयोजनीय, महत्वपूर्ण तथा अनिवार्य अभिनन्दनीय हैं एवं दोनों ही अपने लिए परम आदर्श-स्वरूप हैं।

नारी नर की पत्नी होने पर भी नर नारी का सेवक, सखा स्वामी है। इसी प्रकार नर नारी का पति होने पर भी नारी नर की स्वामिनी, सखी और सेविका है। नारी पतिव्रता है और उसका यह पतिव्रत्य है - यथार्थ में परम पति परमात्मा की अथवा उनके परम प्रेम की प्राप्ति के लिये ही। यही नारी की विशेषता है और इसकी स्वीकृति में ही पुरुष की महत्ता है। नारी सेविका होते हुए भी स्वामिनी है और नर स्वामी होते हुए भी सेवक है। दोनों ही स्वतन्त्र और दोनों ही स्वेच्छा स्वीकृत परतन्त्र हैं। यह परतन्त्रता उनकी स्वतन्त्रता की शोभा है। अवश्य ही दोनों की स्वतन्त्रता के क्षेत्र और पथ पृथक्-पृथक् हैं। यही दोनों का स्वधर्म है। नारी घर की रानी है, साम्राज्ञी है, घर में उसका एकछत्र राज्य है, पर वह घर की रानी है - मूर्तिमान् परार्थ जीवनधारिणी, त्यागमयी आदर्श गृहिणी और स्नेहमयी माता के रूपमें। यही उसका नैसर्गिक पवित्र स्वातन्त्र्य है।

नारी की इस आर्दश स्वतन्त्रता का ही प्रथम सोपान है - यह विवाह संस्कार । यह विवाह - संस्कार पवित्र मङ्गलमय अनुष्ठान है । इसीसे इसमें सर्वत्र मङ्गल ही मङ्गल -उत्सव ही उत्सव दर्शन होते हैं ।

विवाह की प्रमुख विधियां तथा विवाह में पूजा सामग्री :-

भारतीय समाज में विवाह एक महत्वपूर्ण पवित्र कार्य है प्रायः लड़के लड़कियों के व्यस्क होने पर माता-पिता और घर के बड़े एवं अनुभवी सदस्य अपने अनुभव के आधार पर एक दूसरे के अनुरूप वर-बधू का चयन करते हैं । लड़के-लड़की की प्राथमिकता आवश्यक है ।

सगाई -

सगाई पक्की होने के बाद हम बहू या बेटी का नेक करते हैं । बेटी के नेक में हम सामने वाले सगों की रिवाज के अनुसार करते हैं । बहू के नेक में, बहू के साढ़ी कपड़ा, गहना, पायल, हम भेजते हैं, खोल में नगद भी डालते हैं व मिठाई फल व उनके घर के छोटे बच्चों के कपड़े भी भेजते हैं ।

नान्दी मुख -

हम शादी के पहले अच्छा दिन पंडित से पूछकर नान्दीमुख करवा लेते हैं जिससे शादी के समय परिवार में किसी का जन्म या मृत्यु की घटना होने से शादी वाले घर में सुआ-सूतक का दोष नहीं लगता ।

सामग्री:- लाल वस्त्र आधा मीटर, सफेद वस्त्र आधा मीटर धोती, गमधार, गेहुं ढाईसौ ग्राम, चावल ढाइसौ ग्राम, रोली, मोली, मिट्टी का कलश एक, नारियल, मिट्टी के दीपक सात, पत्तल पांच, डाब, हरा आँवला (अगर हरा ना हो तो सूखा हूवा), किशमिश, जौ सौ ग्राम, तेल सौ ग्राम, चावल सौ ग्राम, सोना की टीकड़ी चार, सर्वोषधि, सफेद पुष्प, ऋतु फल पांच, प्रसाद, पान पांच, लौंग पांच, इलायची पांच,

सुपारी पांच, पीली सरसो ।

गुड-मूंग खरीदना-

यद्यपि वैवाहिक तैयारियां पहले ही शुरू हो जाती हैं परं जिस दिन बरनी बंधाते हैं, उस दिन प्रतीक रूप से सवाये तौल से गुड-मूंग खरीदा जाता है । (सवाया तौल यानी सवा सेर, सवा पांच सेर इत्यादि) जिसे रसोई में रखा जाता है ।

कुंकुं पत्रिका-

पहली पत्रिका गणेशजी-कुलदेवता-इष्टदेवता के नाम की लिखी जाती है । रणथम्भोर के गणपति (गणेश जी) को प्रथम पत्रिका भेजने की पुरानी परम्परा है । वहां पर पुजारी द्वारा मंदिर में भगवान को पत्रिका पढ़कर सुनाई जाती है ।

रणथम्भोर का ठिकाना: श्री गणेश जी मन्दिर, रणथम्भोर सवाई माधोपुर (राजस्थान)

लग्न पत्रिका-

सामग्री:- छपी हुई लग्न पत्रिका, गणेश जी की पूजा की थाली । कन्या पक्ष: सबसे पहले पंडित जी कन्या के पिता से पूजा करवाते हैं । लग्न पत्रिका में वर-कन्या के नाम एवं मुहूर्त आदि लिखकर पत्रिका की भी पूजा करवाते हैं । पूजा के बाद कन्या का भाई और पंडितजी लग्न पत्रिका एवं गणेश जी की थाली लेकर वर के यहां जाते हैं ।

वर पक्ष:- लग्न आता है तब वर पक्ष के सम्बन्धियों की उपस्थिति में पंडितजी वर के पिता से गणेश पूजा करवाते हैं और लग्न पत्रिका पढ़ कर सुनाते हैं । कन्या का भाई पहले घर के बड़े बुजुर्गों को लग्न पत्रिका प्रदान करता है । वर पक्ष द्वारा उपस्थित व्यक्तियों को तिलक करके नारियल दिया जाता है । पंडितजी एवं कन्या के भाई को नेग देते हैं ।

बनावा-

सामग्री: मिठाई, माला, नकद रुपया

वर/कन्या की बुआ-बहनें अपने परिवार की औरतों के साथ विवाह में बनावा लेकर आती हैं। विनायक, घोड़ी, बन्ना-बन्नी, सुहाग एवं सगा-सगी के गीत गाती हैं। बहन बन्ना/बन्नी को तिलक लगाकर, माला पहनाती है, अपने घर से लाई हुई मिठाई से मुहं मीठा कराती है और रूपये देती है। घर वाले सगियों को नाश्ता करवाकर नेग देते हैं। वर और कन्या को आशीर्वाद देने के लिये ननिहाल पक्ष बनावा लाता है फिर भुवा बहनें बनावा लाती है।

टोट: बनावे के रूपये वर या कन्या को देते हैं।

बत्तीसी-

बत्तीसी का मतलब बहन अपने भाइयों को निमंत्रण देने जाती है। घर में भाणजे या भाणजी की शादी है आप को सभी बन्धू-बन्धव, इष्टमित्र घर के सभी भाई, भाभी, भतीजे - भतीजी सहित आना है। मायरा से पहले कभी भी बत्तीसी कार्यक्रम करें। बत्तीसी के लिए 5 किलो चावल, गुड़ की भेली 32 सुपारी, 32 लोंग, 32 इलायची, 32 छुहारा, 32 काजू, (32 सामान 32 चीज) नारियल गोटा, रूपैया भाई सबको देने के लिए, भाभी के लिये ब्लाउज तथा लड्डू बांटने के लिए।

बड़ी बनाना-

शादी के लिए मूँग की दाल की बड़ी बनाई जाती है। बड़ी बनाने के समय आस पड़ोस की सभी औरतें इक्कठी होती हैं। बना या बनी को टीका लगाया जाता है। सभी औरतें मिलकर मंगल गीत गाती हैं। जिस चीज पर बड़ी बनाये - कोयला, मूँग, दूब, चाँदी की कोई चीज एक कोने में रखें।

मूँग बखेरना-

पण्डितजी को मोहरत दिखाकर मूँग बिखेरे जाते हैं। लड़की व लड़के की शादी दोनों में बिखेरे जाते हैं। मूँग बिखेरने के लिए सवा किलो या 5 किलो मुंग लिये जाते हैं। बना या बनी को टीका लगाया जाता है। परिवार समाज की सभी औरतें मिलकर देवी देवता के और मंगल गीत गाती हैं। बना या बनी के मेहन्दी भी लगी होनी चाहिए।

मूँग बखेरे की सामग्री: कुंकुम, चावल, मोली, मुंग सवा किलो, चालनी, थाली में सखिया माँड़ना चाहिए।

धी पिलाना-पीला चावल-

पण्डितजी के बताए अनुसार धी पिलाने का नेग किया जाता जिसमें भगवान गणेशजी की पूजा होती है। सभी देवी देवताओं के लिए पत्रिका रखी जाती है। पीले चावल बनाए जाते हैं। जिनसे सभी देवी देवताओं और अपने समाज के सभी बन्धु इष्ट मित्र को न्यौता दिया जाता है। लड़की की शादी में न्यौता घर पर पधारे सभी बन्धु इष्ट मित्रों को दिया जाता है। लड़के की शादी में पीले चावल बारात में जाने वाले सभी बन्धुओं को दिये जाते हैं। धी हम 5/7/11 दिन पहले पिलाते हैं।

धी पिलाने के लिए गणेश पूजा की सामग्री:- कुंकुम, चावल, रोली, मोली, पान, सुपारी, फल, दूब, प्रसाद, आम की डाली, नारियल गोटा, गुड, लौंग, इलायची, अगरबत्ती, पाटा, गुलाबी कागज, पेन, चाँदी कि कटोरी, चाँदी का सिक्का, कलश, धी, पत्तासा, इत्यादि।

बंदोरा-

पीला चावल या धी पिलाने के दिन शाम को वर/वधु अपने अपने पुरोहित या सुहासिनी के यहाँ भोजन पर जाते हैं।

बिड़द बड़ा/ बिड़द विनायक/ मूँगधना-

इसमें भगवान श्री गणेश की विधीवत स्थापना की जाती है। सात सुहागन मिलकर गोबर व मिट्टी से चौका देती हैं, उस पर स्वास्तीक बनाकर, स्वास्तीक पर एक पाटा रखा जाता है जिस पर

एक सफेद कपड़े के चारों कोने हल्दी में रंग कर बिछाया जाता है। उस पाटे पर मूँग की दाल पीस के बिड़द बड़े दिये जाते हैं। 5 कुँवारी कन्याओं से यह बड़े लगवाये जाते हैं तथा नेग देने का रिवाज है। मंगल गीत गाए जाते हैं।

मूँगधना (विनायक) में घर के नौकर के सिर पर लकड़ियाँ और आम की डाली को मौली में बाँधकर बुलाया जाता है। घर के दरवाजे पर उसके टीका लगाकर धी पतासा से मुँह जुठाया जाता है फिर दक्षिणा देकर लड़के या लड़की की माँ उससे वह लकड़ियां लेकर छत या छत के कमरे में रखती है। फिर लड़के या लड़की की भूवा उसकी माँ की आरती करती है। इस समय में नृत्य भी करते हैं, घूमर भी डालते हैं। दूल्हे या दुल्हन की माँ के हाथ में स्वरितक बनाया जाता है।

तनी-

एक लाल कपड़े में नमक राई बाँधकर तनी में टाँगते हैं। राखी, सिकोरा, खाजा, तनी में बाँधकर तनी बाँधी जाती है।

पीठी-

सामग्री- गेहूँ, मूँग, जायफल, जावित्री, केशर, हल्दी, मेहन्दी, कस्तुरी। मूँग बखेरने के दिन एक सुहागन स्त्री जिसके सास, ससुर, माता, पिता चारों होते हैं टोपीया पर मोली बाँधती है, टोपीया में साँखीया बनाकर, टोपीया में मूँग डालकर पानी डालें एक मिनट के लिये हल्का गरम करें फिर उसे छानकर ढगरे में डाल दें। चना की दाल, गेहूँ जौ को मूँग के साथ सुखा दीजिये। यह सूखने के बाद पीसने के समय केशर, कस्तुरी, हल्दी, जायफल, जावित्री डालकर सात सुहागनें मिलकर पीठी पिसती हैं। मंगल गीत गाती हैं। फिर यह पीठी बन्ना या बन्नी को लगाई जाती है।

झोल या अटाल-

लड़के की माँ लड़की के माता पिता गंठजोड़ा बाँधकर खड़े हो जाते हैं। आगे पाटे पर बनड़ी या बनड़ा तथा बिनायक को बिठाया जाता है।

पहले विनायक को और तब बना या बनी को पहले पिता अटाल डालते हैं माँ रगड़ती है फिर माँ डालती है पिता रगड़ते हैं। ७ बार भोल डाला जाता है। फिर गरम पानी से नहलाते हैं। अटाल बनाने के लिए जिस महिला के सास, ससुर, माता, पिता चारौं होते हैं उससे काँसी के कटोरे में स्वास्तिक बना कर दही, हल्दी, पानी, पिसी हुई पिठी तथा बेलन आदि सामान से तैयार करते हैं। उसे थोड़ा सा निवाया कर के पल्ला से ढक कर लाते हैं।

बिरद विनायक के दिन सिर्फ माँ बाप भोल डालते हैं। भोल डालकर काँसी का कटोरा यूँ ही रख दिया जाता है।

दूसरे दिन उसे धोकर फिर से भोल बनायें।

रोलाडोला-

इसमें ५-७ सुहागनें मिलकर ७ किसिम के अनाज को दो डगरे (सूप) में एक दूसरे को देती-लेती है। दो दो औरते पीला ओढ़कर रोला-डोला करती है। (चावल, गेहूँ, मूँग, नमक, हल्दी गाँठ, सिक्का, दो डगरे, दो बेलन) महिलाएँ मंगल गीत गाती हैं। एक तरफ बन्ने या बन्नी की माँ ही बैठती है दुसरी तरफ सहागने बदलती रहती है। यह किया प्रत्येक औरत ७ बार करती है।

लक दन-

अटाल का काम होने के बाद बन्ना या बन्नी को नहला कर पाटे पर खड़ा किया जाता है। बना या बनी तथा विनायक दोनों पांच या सात सुहागन को लक देते लेते हैं। महिलाएँ मंगल गीत गाती हैं। फिर पिता द्वारा पहले विनायक को फिर बना या बनी को पाटे के आगे सिकोरा, सवा रुपया, मूँग रख कर, चप्पल पहना कर उस पर पाटा से उतारा जाता है। माया की पूजा की जाती है।

सामग्री:- गुड़, ताँबा का सिक्का, चांदी, जीरा, लाख, धनीया, अजवाइन सब सामान साथ में मिलाकर गोटा लगे लाल कपड़े में बाँध दें। इसे लकधन कहते हैं। इसको मूँग के दिन ही तैयार कर के रख लें।

विनायक-

विनायकजी की पूजा की जाती है। जिसमें लड़का या लड़की एवं विनायक, माँ, पिताजी सभी बैठते हैं। पण्डित जी द्वारा पूजा कराई जाती है। माया का पन्ना दीवार पर लगा कर धी के भारे लगते हैं। वर या वधु द्वारा मेहन्दी व पीठी के हाथ लगवाए जाते हैं। उस दिन लापसी, चावल की रसोई बनती है। एक थाली में सात जगह निकाल कर विनायक जी को भोग लगता है। मंगल गीत गाते हैं। वर-वधु की माता स्नान कर कोरे कपड़े पीली साढ़ी पहनती है, माया की स्थापना होती है, पहली राखी विनायक जी को बाँधकर सभी सुहागनों के राखी बान्धते हैं, मेहन्दी लगाकर बिहाणा गाते हैं।

विनायक की सामग्री:- - रोली, चावल, मोली, फल, प्रसाद, पान, पुष्प (लाल पीला), दूब, सुपारी, गणेश जी का पाना, नारियल डोरी, ७ मिट्टी का सिकोरा, ५ दिया, धी, मेंहदी, पीठी, ५-७ लकड़ी, २ आम की डाली, गुड़, २ डगरा, २ बेलन, १ कटोरी चावल, १ कटोरी गेहूँ, १ कटोरी नमक, १ कटोरी मूँग, ७ हल्दी गाँठ, ७ सिक्का, १-१ मीटर लाल-सफेद कपड़ा, मुँग की दाल थोड़ी पिसी हुई (बिड़द बड़ा के लिए), पापड़, खाजा, चूनड़ी की लाल साढ़ी तणी पर देने के लिए, २ पाटा, २ गड़ीया, रूई, अगरबत्ती, १ कटोरी धी।

विनायक बैठता है उस दिन से बियाणा गाते हैं।

सांझ- संझोकड़िया -

विवाह के घर में संध्या समय दीपक संजोकर औरतें सांझ-संझोकड़ियां के गीत गाती हैं। पितरों की आगवानी व आशीर्वाद के लिये यह दीपक करते हैं।

नोट:

- १) सभी पूजा में पूर्व पश्चिम दिशा में मुंह कर के बैठते हैं।
- २) हाथ-काम के बाद में शादी के दिन तक माया तथा गणेशजी को भोग लगाने के बाद सर्वप्रथम वर/कन्या भोजन करते हैं।

३) हाथ-काम पांच या तीन दिन का लिया जाता है।

४) सांभ संझोकड़ियां विनायक के दिन से फेरों दिन तक गाया जाता है।

बिहाणा-

शादी में हम तीन दिन पाँच दिन या एक दिन के बिहाणे गाते हैं, चौकी पर कलश रखते हैं कलश में पानी भर कर, स्वास्तिक बना कर, आम का पल्लव रख कर, उस पर फल रख कर नीचे गेहुँ बिछाकर २ दिन, पाँच या ७ बिहाणे गाते हैं, शादी वाले दिन पूरे १६ बिहाणे गाते हैं हर दिन मेहन्दी घालते हैं, पीठी भी घोल कर थोड़ा-थोड़ा हाथ पीला करते हैं। बिहाणा गाने वाली औरतें नाखुन में मेहन्दी लगाती हैं।

साँझ्या-

साँझ में गणेश जी के आगे धी का दिया जलाते हैं तथा सींज्या के गीत गाये जाते हैं।

आंगणा का कार्यक्रम-

शाम होने के बाद काम-काज निबटा कर घर की और बाहर की स्त्रियाँ मिलजुल कर बैठती हैं। देवी देवता, बनोला, बना-बनी, सुहाग-कामण बीरा सेवरा, झाला वारणा, हँसी मजाक के गीत आंगणा के गीतों में शामिल हैं।

बीरा सामाः:-

जब मायरेदार विवाह के घर आते हैं तो उन्हें बाजे गाजे से साथ बधाकर लिया जाता है। पूजा की थाली शर्वत के ग्लास, भाइयों को पेचा। भाई-भाई, बच्चे, मायरेदार घर के गेट पर खड़े होते हैं। वहाँ जाकर बहन भाई को टीका करती है। भाई गेट पर मोड़ की साढ़ी टाँग कर बहन को चुनड़ी ओढ़ता है। शर्वत पिलाया जाता है और आरती की जाती है। बीरा के गीत और बहन का गर्विलापन का स्वर वातावरण को अनूठी शोभा प्रदान करता है।

मायरा-

मायरा में बन्ना या बन्नी द्वारा विनायक जी की पूजा की जाती है। भाई अपनी बहन, बहनोई, भाणजे, भाणजी सगा सम्बन्धी सभी के वस्त्र आदि लाते हैं बहन के वस्त्र, आभूषण, चप्पल तथा सब तरह के श्रृंगार के सामान लाते हैं। बनड़ी को पायल, बिछिया, नथ, चूड़ा, चुन्दड़ी, चप्पल और श्रृंगार। बन्ना हो तो उसको कपड़े लाते हैं। फिर भाई रिश्तेदारों के बीच ससुराल के सभी लोगों को सामर्थ्य के अनुसार भेंट देता है, जिसे मायरा भरना कहते हैं।

कोरथ या बरणा-

लड़की वाले बरणा लेकर जाते हैं। जिसमें जंवाई की पोशाक, मिठाई, फलफूल मेवा, रूपैये आदि लेकर जाते हैं। बरणा में मिलनी की जाती हैं। जंवाई की खोल भरी जाती है व जंवाई के वस्त्र भी होते हैं।

बरी-

लड़के वाले लड़की के यहाँ बरी ले कर जाते हैं। जिसमें वधू के लिए गहने साड़ियाँ, श्रृंगार के सामान, मेवा, सुपारी, खोल का समान, छोटे भाई बहन के कपड़े इत्यादि होते हैं।

बरी का सामान:- बोरला या माँगटीका, लाल ब्लाउज में स्वास्तिक, मोली का चार गोला, गुलाबी कागज में बरी की लिस्ट, वस्त्रों का साढ़े तीन बेस, देवता का फुलड़ा, सावन सूत, पड़ला का सामान चार चांदीकी डिब्बी (मेन, रोली, मेंहदी, गुड़) सिन्दूर दानी, शीशा, कंघा, पायल, विछिया, इत्र, सुहागपूड़ा, तेल की शीशी, लाल चोटी या रिबन, चादी का सिक्का और आभूषण इत्यादि।

कुछ परिवारों में चिकनी कोथली भी बरी के साथ भेजने का प्रचलन है। बरी भेजने से पूर्व उसकी पूजा की जाती है।

बींद या बींदणी बनने से पहले-

बींद या बींदणी बनने से पहले पीठी सिर से नीचे उतारते हुए, और

झोल डाल कर नहलाते हैं। इस दिन सारा परिवार झोल डालता है। नहाने के पश्चात् पाटा पर विनायक व बनड़ा या बनड़ी खड़े हो जाते हैं। माथे पर टीका लगाकर लकदन लेते हैं। सुहागन स्त्री लकदन लेती है। तत्पश्चात मामाजी बनड़ा या बनड़ी और विनायक के हाथ में रूपैया देते हैं। पाटा के सामने सिकोरों में खोपरा, मूंग और सवा रूपैया डालकर उलटा रखते हैं। बनड़ा को जूती, बनड़ी को चप्पल पहनाकर मामाजी उससे सिकोरा बधरवाते हैं। उसके बाद मामा के घर के कपड़े पहन कर माया के सामने बनड़ी को चूड़ा, बिछिया पायल, नथ पहनाते हैं। माया की पूजा की जाती है, कुछ लोगों के यहां गोर भी पूजते हैं। दूल्हे को दही खाजा से मुँह जुठाते हैं। उसके बाद निकासी की तैयारी की जाती है।

तोरण निकासी-

वर जब विवाहार्थ घर से निकलता है उसे निकासी कहते हैं। नहा धोकर वर सजधज कर घोड़ी पर बैठता है। बींद के घोड़ी पर चढ़ने के बाद माँ घोड़ी की पूजा करती है और भीगी चने की दाल घोड़ी को खिलाती है। माँ द्वारा आँचल का नेग और भाभी-काकी द्वारा काजल घलाई, शीशा दिखाई, भुनभुना बजाई इत्यादी करवा कर नेग देने का रिवाज है। जँवाइयों द्वारा लगाम पकड़ाई करवा कर नेग दिया जाता है। घर के अन्य सदस्य रूपयों तथा लाडू से वारणा करते हैं। सुहासिनी द्वारा जल पात्र लेकर सामेला करने का भी रिवाज है। वर द्वारा कलश में रूपया डाला जाता है। वर के साथ घोड़ी के उपर कुँवारी कन्या बैठती है जो नमक और राई की पोटली से वर की नजर उतारती रहती है।

नोट: रास्ते में मन्दिर पड़ता हो तो बारात उस रास्ते से निकलती है।

टूट्या -

बरात रवाना होने पर वर के घर की स्त्रियाँ शहर की स्त्रियाँ को बुलाकर फेरे के समय टूट्या कार्यक्रम करती हैं। वर-वधु बनकर

विवाह करना, पंडया बनकर विवाह की बधाई लाना और वर्णन करना। कोई स्त्री चुड़ा वाली बन चुड़ा पहनाती और मजाक करती है। कई मजाक के कार्यक्रम होने के बाद बधावे गाये जाते हैं। दूसरे दिन पीले पेट का कार्यक्रम रखते हैं। (आजकल एक ही स्थान पर विवाह होने अथवा स्त्रियों के भी बारात में शामिल होने से यह प्रथा धीरे-धीरे समाप्त हो रही है।)

दुकाव एवं बारात स्वागत-

सामग्री: चन्दन चौकी (बाजोट), तोरण, कपासिया मिले हुवे पुष्प, वरमाला दो, पोखने के लिए चांदी का भालरा, बिलोवणे की रस्सी, काजल, चांदी का रूपैया, बँधा हुआ दही।

बारात पहुँचने पर कन्या पक्ष द्वारा बारातियों का स्वागत किया जाता है एवं स्त्रियां तालोटा गाती हैं। वर के मामा वर को घोड़ी से गोदी में उठाकर चन्दन चौकी (बाजोट) तक लाते हैं। वर बेरी या खेजड़ी की डाल से तोरण को छूकर दरवाजे के बायीं ओर टांग दिया जाता है। कन्या की माँ वर के आगे खड़ी होकर भालरा, डोरी और ओढ़ने के पल्ले से वर को पोखती (नापती) है।

सासू द्वारा जँवाई टीकने के बाद काकी या भाभी काजल डालती है। उसके बाद वरमाला होती है। वरमाला पश्चात् जँवाई की पीठी उतारी जाती हैं (प्रतिकात्मक रूप में)। लकदन लिया जाता है। फिर कँवर कलेवा का रिवाज है। इसके बाद मामा फेरा किया जाता है। दुल्हन मामा की गोद में दुल्हे के चारों तरफ घूम कर पुष्पों की पंखुड़ियां उछालते हुए चार फेरा देती हैं। तत्पश्चात् सासू दुल्हे की कमर में ओढ़ना डालकर माया के पास ले जाती है। माया की धोक के बाद फेरों में बैठाया जाता है।

चंवरी-

आजकल स्टेज कार्यक्रम को पहला स्थान दिया जाता है। फिर भी चंवरी के बिना विवाह सोचा भी नहीं जा सकता। शुभ मुहूर्त पर

वर-वधू, वधू के माता-पिता पुरोहित के आज्ञानुसार अपना स्थान ग्रह करते हैं। बीचो-बीच होम प्रज्वलित किया जाता है। अग्नि की साक्षी से बीरा सेवरा (बीरा सेवरा धान की फुल्ली से होता है), कन्यादान, मामा सेवरा (मामा सेवरा बेलन या होम करने के सर्वा से किया जाता है।) सप्तपदी पवित्र कार्य संपन्न होते हैं। चंवरी से उठते ही वधू परिजन सहित वर के डेरे तक जाती, वहाँ के लोग आरती कर खोल भरते हैं। बधावे के साथ विवाह की महती प्रक्रिया समाप्त होती है।

विवाह फेरा-

दुल्हा दुल्हन चंवरी में बैठते हैं, सामने दुल्हन के माता-पिता बैठते हैं पण्डित फेरे करवाते हैं।

हथलेवा-

सामग्री: लाल वस्त्र, मेहन्दी, पूजा की थाली, नगद रूपैया।

हथलेवा या हस्त मिलाप का मुहूर्त ही विवाह का असली मुहूर्त होता है, अतः तयशुदा शुभ मुहूर्त में हस्त मिलाप करवाया जाता है। हथलेवे में मेहन्दी काम में ली जाती है जिसे कन्या के बहन-बहनोई पीसते हैं जिसे रंग बाँटना कहते हैं। बहन को नेग एवं बहनोई को रूपैया दिया जाता है। हथलेवा जोड़ने के बाद कन्या दान में वर-वधू को कन्या के माँ बाप नेग देते हैं। सेवरा देने भाई एवं मामाजी आते हैं।

शास्त्र सम्मत विधि के साथ निम्नलिखित लोकाचार भी किये जाते हैं।

- (१) अन्तरपट लगाने का मतलब है कि घर की वात बाहर ना जाये।
- (२) गऊ दान जँवाई को।
- (३) कन्यादान का व्रत करने वालों द्वारा कन्या को चंवरी की मुंह दिखाई।
- (४) फेरों के बाद वर-कन्या पर वार-फेर।
- (५) माता-पिता पर घोल (नजर उतारण)
- (६) वर की बहन द्वारा वर-वधू का आरता करें तथा आरता पर नेग दें।
- (७) कन्या की भुवा द्वारा माता-पिता का आरता करें तथा आरता पर नेग

दें।

- (८) चंवरी की साड़ी ओढ़ाने वालों द्वारा बेटी को साड़ी व जँवाई को नेग तथा पान खिलाना। फेरे के बाद वर पक्ष और कन्या पक्ष वाले अपन बड़े बुजुर्गों को बधाई (विवाह की शुभकामना) देते हैं।
- (९) फेरों से उठते ही लड़के का बहनोई या कोई बुर्जुग ससुराल की तरफ से खोल भरते हैं। फेरो के खोल भरने के बाद वर-वधु को माया की धोक दिलाते हैं।
- (१०) जो फेरा का व्रत करते हैं (कन्यावल) फेरे के बाद वधु का मुँह देख कर नेग देते हैं एवं व्रत खोलते हैं।

पेरावणी-

पेरावणी में विदाई की तैयारी की जाती है। बेटी, जवाई को साथ बिठाकर बेटी को मेहन्दी लगाई जाती है तथा कोरी साड़ी ओढ़ाई जाती है। वर पक्ष के बुर्जुग को बाजोट पर बैठाकर काँसी एवं चांदी के दो बाटका में रूपैया डालकर दुशाला के साथ दिया जाता है। पेरावणी में बाटका के साथ सगाजी का श्रंगार करते हैं। कुकुं का छापा, मिठाई रूपैया की माला पहनाई जाती है। सगा सगी के रूप में गुड़ा-गुड़ी भेंट दी जाती है एवं सगाजी को पीला ओढ़ाया जाता है। समधी से तिलक लगाकर ५-७ या उससे अधिक मिलनी होती हैं।

फेर पाटा-

पंडित द्वारा फेर पाटा की रस्म अदा की जाती है। वर-वधु को पान के पत्ते का मोड़ लगाया जाता है। वर पक्ष वाले की तरफ से वधु के लिये फेर पाटा का बेस आता है जो वधु के गोड़ पर रखा जाता है। ससुराजी वह को गोड़े पर बैठाकर अगूँठी पहनाते हैं फिर विदाई होती है।

पेरावणी से उठने के बाद वर द्वारा तनी का, भट्टी का और बे के बर्तन (सात हाँड़ियों को बे का बर्तन कहा जाता है), का नेग होता है।



माया के पास वर-वधु को ले जाकर देवता का प्रसाद व नारियल बधारा जाता है। वर कन्या का दही-खाजे से मुंह जुठाकर घर के बड़े लोग बेटी जँवाई को विदाई देते हैं।

विदाई-

विदाई के बक्त रसोई घर या माया के कमरे की दहलीज की पूजा की जाती है। थोड़ा सा गोबर, गुड़ या लड्डू, सवा रूपैया रखकर कुंकुं मोली का छींटा देकर थली पूजाई जाती है। वर कन्या को तिलक लगा कर सीख देते हैं। वधु को वधु की माँ चांदी के प्याला में खोल व रूपैया डालकर लाल कपड़े से बाँधकर देती है, जो वधु ससूराल में गाड़ी से उतरते ही सासू या जो सुहागन महिला वर-वधु को बधारते हैं उन्हें पगा लागकर दे देती हैं।

सामा लेवणा-

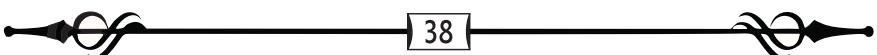
वधु के माथे पर चांदी के कलश में रूपैया डालकर, जल भरकर आम का पल्लव एवं फल के साथ रखें। वर आगे एवं वधु पीछे चलती है। वर वधु के उपर ओढ़ने से छत की जाती है जिसे जँवाई पकड़ते हैं। वधु की पटली में नथ लगाने की भी परम्परा है जिसको अन्दर आने के बाद खोल लिया जाता है।

बार रुकाई-

बहन बेटीयों द्वारा घर के मुख्य द्वार पर वर वधु की बार रुकाई का दस्तूर है। बहन बेटीयों को नेग देकर वर-वधु का गृह प्रवेश किया जाता है।

गृह प्रवेश-

घर के आँगन में हिरमिच व चूने से पगल्या एवं थाल माँड़ने का चलन है। थाली में सखिया माँड़कर, गुड़, पतासा, मूँग, चावल, पैसा, सुपारी, खारक डालकर माँड़ने के उपर रखा जाता है। प्रवेश के समय बहु को बाया पैर एवं वर को दाहिना पैर भीतर रखना चाहिए। बहु के पैर में कुंकुं लगाने का भी प्रचलन है। वर कटार से



एक-एक थाली वायें और दायें खिसकाते जाता है और बहु बिना आवाज किये वो थालीयां एक के अन्दर एक उठाते जाती हैं और सब थालीयां एकट्ठी कर के सासू को देती है। सासू बहु को नेग देती है और बहु की पटली में लगाई नथ खोल लेती है। तत्पश्चात् सास बहु से भण्डार घर में धी और गुड़ में हाथ लगवाती हैं। फिर एक बार गठजोड़ा बधार दिया जाता है। उसी दिन मन्दिर भी भेजा जाता है। मन्दिर जाने से पहले वधु द्वारा सिर धोने का प्रचलन है।

सिर गुथी -

सिर गुथी में बहु को गद्दी पर बैठाकर ननद या भुवा सासू पड़ले के सामान से सिर गुथी करती है। उसके बाद मोड़ नहीं बाँधा जाता है। सिर गुथी में सिन्दूर लगाकर बोर लगाया जाता है। लाख का चूड़ा (लखेसरी) मोमबत्ती या कोयला से हलका गरम कर के बहु को पहनाया जाता है। उसके बाद जल का ढींटा देकर चूड़ा में मोली बाँधते हैं। बहु को तिलक लगाकर गुड़ से मुँह जुठा दें।

पग-पकड़ाई -

सिर गुथी के बाद पग पकड़ाई होती है, पग पकड़ाई में घर के बुर्जुग बहु से पैसों और रूपैयों की कोथली में हाथ डलवाते हैं और बहु जितना रूपैया निकाले उसी रूपया को नेग स्वरूप देते हैं। उसके बाद घर के बड़े चौकी पर बैठते हैं। बहु उन्हें प्रणाम करती है और वो बहु को नेग देते हैं। अन्तिम में देवर भाभी के गोद में बैठता है और भाभी कान खींचकर नेग देती हैं। पग पकड़ाई के बाद घुमाने का नेग भी किया जाता है। जिसमें जोड़े से पुरुष वर को एवं महिला वधु को नेग देकर घुमाती है। फिर जुआ-जुई खिलाकर मनोरंजन करते हैं।

सुहाग थाल-

एक थाल में लापसी चावल, बड़ी की सब्जी पुरस कर सात सुहागन वधु के साथ बैठती हैं। वर उसमें धी डालता है और बहु रोकती हैं।

फिर सब सुहागनें चांदी के रूपैये से वधु का मुंह जुठाती हैं अन्त में वर-वधु भी एक दूसरे को खिलाते हैं।

शाम में वर की माँ (सिर धोकर)-पिता, वर-वधु माया के सामने बैठकर पूजा करते हैं। वर-वधु एक दूसरे का काँकड़ डोरा खोलते हैं। कहीं-कहीं रात में राती जोगा देने का भी प्रचलन है।

मन्दिर से आने के बाद एवं पग पकड़ाई आदि नेग के बाद घर के देवता को भी नारियल बधारते हैं।

शादी के बाद गणेशजी का प्रसाद किया जाता है। तोरण-तणी, बे का वर्तन सब घर में ले आते हैं।

इस प्रकार हंसी खुशी के वातावरण में विवाह का कार्य सम्पन्न होता है।

फिर आए हुए मेहमानों को विदाई दी जाती है, साल भर तक के सारे त्यौहारों में उपहार भेजे जाते हैं, पहले श्रावण में बहू पीहर रहती है, पूनम के दिन बेटा लेने जाता है, भादो के एकम के दिन बहू तीज के सत्तू व मिठाई, फल, कपड़े वगैरह लेकर आती हैं। बहू को तीज का सिन्जारा भेजा जाता है। दिपावली में लड़की के ससुराल मिठाई, कपड़े पटाखे भेजे जाते हैं, बहू को साड़ी गहने दिए जाते हैं। संकान्ति में फीनी, घेवर, गौद, मेथी के लड्डू बेटी के ससुराल भेजे जाते हैं। बेटी व समधिन के कपड़े भी भेजे जाते हैं।

बहू द्वारा सक्रान्ति पर किए जाने वाले नेग

ससुरजी को दाख का प्याला देना -

प्यालो भरियो दाखा को सुसरो म्हारो लाखा को, किशमिश से भरकर चांदी का प्याला ससुरजी को देते हैं। सास-ससुर, जेठ-जेठाणी, ननद-ननदोई आदि की सूती सेज करते हैं, पुरुषों को नारियल व रूपैया देते हैं, औरतों को साड़ी-ब्लाउज।

ननद ननदोई की सूती सेज-

ननद के कपड़े, ननदोई के कपड़े, गहने श्रृंगार का समान, मिठाई आदि । ननद ननदोई को जोड़े से बैठाकर, भाभी टीका लगाकर समान व रूपैया देती है । वापस ननदोई द्वारा रूपैया दीए जाने का रिवाज है ।

खूटी चीर-

भाभी-ननद को चावल जिमाकर साड़ी ओढ़ती है, बहन भाई को पास में खड़ा रखती है, फिर पूछती है “जिस्या चावल ओढ़या चीर बताओ बाइजी कठे थारो बीर”, फिर ननद कहती है, “जिस्या चावल ओढ़या चीर, ए ऊभा भाभी म्हारा बीर” ।

पीर का गेला पेराना-

सासुजी को पगे लगकर साड़ी पहनाते हैं ।

सरवर स्नान-

सासूजी को स्नान करवाकर साड़ी पहनाते हैं ।

पेढ़ी उतारना-

सासूजी-दादी सासूजी को 7 या 11 सीढ़ीयों से हाथ पकड़कर उतारते हैं, हर सीढ़ी में रूपैया रखते हैं, बाद में पगे लगाकर रूपये देते हैं ।

देवर-जेठ को घेवर-फीणी पुरसना-

थारे स्नेह री सुगंध भीनी-भीनी जीमो म्हारा जेठजी (देवरजी) घेवर-फीणी ।

भगवान के पट खोलना-

ठाकुरजी के परदा, नारीयल व रूपये चढ़ाकर भगवान के पट खुलवाते हैं ।

सासु साड़ी बाग-बाड़ी-

बाग में आकर सासूजी को साड़ी पहनाते हैं ।

काजल टीकी-

बारह महिना तक ननद को काजल टीकी, लगाकर माथे की टीकी

के रंग बिरंगे पत्ते के साथ में सोने चांदी की मीने की बनी टीकी,
मेकअप का सामान, कपड़े एवं नगदी रूपया देते हैं।

नोट - माथा चुपड़ कर मांग टीका भी देते हैं।

मेहन्दी लगाना-

ननद के बारह महिना मेहन्दी लगाकर कपड़े वगैरह देते हैं। चाँदी का
प्याला, अंगुठी, मेहन्दी, नगदी रूपया अपनी इच्छानुसार देते हैं।

चप्पल पहनाना-

बारह महिना ननद को चप्पल पहना कर चप्पल, साथ में पायल
विछिया व कपड़े देते हैं।

आंवती लक्ष्मी साड़ी लेण्-

सक्रान्ति के दिन सासूजी आपकी बहू को दरवाजे के पास खड़ी
करके तिलक लगाती हैं, साड़ी ओढ़ाती हैं।

ससुरजी को गुड़ की भेली व रूपये देते हैं, आ लो सुसराजी गुड़ की
भेली बताओ थांकी हेली।

गुजिया भरना-

कुंवरी जेठुती को बारह महीने तक हर महीने पाव चीज (जैसे
काजु, किशमिश, मिसरी, मखाणा) आदि देना, बाद में डेस देना।

पग पुजाई-

संक्रान्ति पर घर की बहु ससुर जी, दादा ससुर जी या जेठ जी की
पग पुजाई करती है। एक चांदी के बाटके या प्याले में कच्चे दूध
से पैर धोती है। घोटी हुई केशर से पैर में टीका लगाते हैं। साथ में
नेग के रूपये और चांदी का प्याला या बाटका जिसमें पैर धोते हैं।
उसे भी देते हैं।

मेथी के लड्डु-

दादी ससुर या ससुर किसी को मेथी के लड्डु परोसते हैं, टीका
काढ़कर हाथ में रूपया देते हैं। यदि दादी सासु, सासु को परोसते
हैं, तो नगदी रूपया पगे पड़नी का दे देते हैं।

गौंद गिरी के लड्डु या चक्की-मिठाई मेथी के लड्डु की तरह ही परोसते हैं।

मेवा- लड्डु या चक्की की जगह मेवा भी परोसते हैं।

श्रृंगार पेटी-

यह सुहासनी का होता है। इसमें साढ़ी, लहंगा, ब्लाऊज, रूमाल, चप्पल, गहना, चांदी के समान, शाल, चदरा, खोली, जंवाई का कपड़ा एक जोड़ी, श्रृंगार के सारे समान एक पेटी में डालकर देते हैं।

चीर ओढ़ाना-

साढ़ी, लहंगा, ब्लाऊज, रूमाल, चप्पल, साथ में अपनी इच्छानुसार गहना सुहासनी को देते हैं।

स्नान फ्लाना-

तीन साढ़ी, लहंगा, ब्लाऊज, रूमाल, तैल, सेन्ट, साबुन, मग, बाल्टी, धामा, तौलिया, चांदी का एक बर्तन सुहासनी को देते हैं।

नाश्ता-

चाँदी की प्लेट में मिठाई भरकर साथ में इच्छानुसार नगदी रूपया सुहासनी को देते हैं।

पान सुपारी-

चाँदी के प्याले में पान के साथ नगदी रूपया देते हैं। यदि सुपारी देते हैं तो साथ में सरोता और नगदी रूपया भी देते हैं।

दूध-

देवर, नानदा, जेठुता को चांदी का लोटा या गिलास दूध भरकर देते हैं साथ में रूपया भी देते हैं।

गुन्जा-

मेवा, लड़के का कपड़ा एवं नगदी रूपया लड़कों को देते हैं। इसमें घड़ी, बटन कुछ भी अपनी इच्छानुसार दे सकते हैं।

पुरसावणी-

ससुर, काकी ससुर, मामी ससुर, मासी ससुर, जेठ, देवर, ननदोई

आदि को मिठाई परोसते हैं, साथ में रुपया भी देते हैं।
इत्यादि कई नेग किये जाते हैं।

होली पर बेटी के ससुराल मिठाई कपड़े वा रंग पिचकारी भेजते हैं, बहू को साड़ी देते हैं। गणगौर पर बहू 16 दिन गणगौर पूजने पीहर जाती है, सिन्जारा के दिन बेटा लेने जाता है, बहू के सिन्जारा भेजा जाता है, बहु मिठाई, फल मेवा व कपड़े लेकर आती है। इस प्रकार हर त्यौहार में, जन्मदिन, शादी के दिन, व विशेष दिनों में यह आदान-प्रदान होता है।